

## डॉ. अगस्त कोकेल, नीतिवचन, सत्र 2

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या दो है, नीतिवचन का उद्देश्य, नीतिवचन अध्याय 1।

नीतिवचन पर हमारे व्याख्यानों में आपका फिर से स्वागत है। हम नीतिवचन के बारे में कुछ और बात करने जा रहे हैं। यह सत्र दो है। इस सत्र में हम विशेष रूप से नीतिवचन के संक्षिप्त लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण परिचय के बारे में बात करना चाहते हैं, जो हमें इसके उद्देश्य के बारे में बताता है।

मैं नीतिवचन की पुस्तक को उसके शीर्षकों के अनुसार रेखांकित करके आरंभ करना चाहता हूँ। और मैं आपको बताऊंगा कि यह महत्वपूर्ण क्यों है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि, इस संक्षिप्त परिचय में, शीर्षक को अक्सर आगे आने वाले उद्देश्य कथनों का विषय बनाया जाता है।

मुझे नहीं लगता कि यह इस एक्सोर्डियम की सही व्याख्या है जैसा कि हम इसे कहते हैं। बल्कि, मेरा मानना है कि इसे नीतिवचनों में मौजूद अन्य सभी शीर्षकों के साथ एक शीर्षक के रूप में छोड़ दिया जाना चाहिए। इसलिए, उन्हें नीतिवचन की पुस्तक में ही बहुत स्पष्ट रूप से रखा और चिह्नित किया गया है।

तो, 1.1 में सुलैमान की नीतिवचन, 10.1 में सुलैमान की नीतिवचन, बुद्धिमानों के शब्द, और फिर ये दोनों बुद्धिमानों के शब्द हैं। और फिर ये सुलैमान की नीतिवचन हैं, जिन्हें हिजकिय्याह के आदमी ने एकत्र किया, अगूर के शब्द, और फिर लमूएल के शब्द, जो उसकी मां ने उसे सिखाया था। ये विभिन्न अनुभागों को दिए गए विशिष्ट शीर्षक हैं।

इसलिए, मैं सुझाव दे रहा हूँ कि पूरी किताब का शीर्षक सोलोमन की नीतिवचन है। फिर चार उद्देश्य कथनों का पालन करें। अब, अंग्रेजी में, इस तरह की वाक्य संरचना काम नहीं करती है क्योंकि, अंग्रेजी में, विषय को पहले आना होगा।

लेकिन हिब्रू में ऐसा नहीं है। जोर देने के लिए, आप वाक्य में जो कुछ भी रखना चाहते हैं उसे पहले रख सकते हैं, और उसके बाद विषय आता है। तो यहां हमारे पास श्लोक पांच में इन शब्दों के साथ चार इनफिनिटिव कथन हैं।

मुझे लगता है कि नीतिवचन के उद्देश्य का एक हिस्सा युवाओं को भोला-भाला चालाकी देना है, और विषय बुद्धिमान है, यानी वे लोग हैं जो किताब पढ़ रहे हैं। तो पुस्तक के श्रोता, जिन लोगों को यह संबोधित है, वे ही बुद्धिमान कहलाते हैं क्योंकि वे सुनेंगे। वे बुद्धिमान हैं क्योंकि वे समझ प्राप्त करेंगे, वे नीतिवचन और सूक्तियों को जानेंगे, और वे बुद्धिमानों के शब्दों और उनकी पहेलियों को समझेंगे।

अब, नीतिवचन में बुद्धिमान वह है जो इसके निर्देश को सुनने को तैयार है। इसका मतलब यह नहीं है कि उनके पास बहुत सारा अनुभव है। इसका मतलब यह हो सकता है कि उनके पास बहुत सारा अनुभव है।

लेकिन किसी भी मामले में, वे केवल इसलिए बुद्धिमान हैं क्योंकि वे महिला ज्ञान को सुनते हैं। जो नहीं करते वे मूर्ख हैं। तो, पूर्वावश्यकता क्या है? बुद्धिमान कौन हैं और वे कौन हैं जो ज्ञान की बात सुनेंगे? खैर, वे वही हैं जो प्रभु का भय मानते हैं।

अब, हम पहले ही उस वाक्यांश को उद्धृत कर चुके हैं, प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है। हिब्रू भाषा में, इस श्लोक में, इस शब्द में प्रयुक्त शब्द रोश है, जिसके तीन अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। इसका एक अस्थायी अर्थ हो सकता है, यह शुरुआत का बिंदु है।

इसमें सार की भावना हो सकती है, यही मुख्य भाग है, यही सब कुछ है। या इसमें गुणवत्ता की भावना हो सकती है, यह सबसे अच्छा हिस्सा है, यही आपको जानना आवश्यक है। अब, संभवतः ये तीनों ही अभिप्राय हैं।

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि लौकिक को जानबूझकर शामिल किया गया है। जब तक आपमें प्रभु का भय नहीं होगा तब तक आप बुद्धिमानों के सदस्य के रूप में शुरुआत भी नहीं कर सकते। और हम यह जानते हैं क्योंकि 9.10 में, यह सिद्धांत दोहराया गया है।

और वहां हमारे पास एक अलग शब्द है। जैसा कि मैंने यहां बताया, यह टिकिला शब्द है। और टिकिला शब्द का अर्थ हमेशा प्रथम होता है।

तो, प्रारंभिक बिंदु, और यह समापन बिंदु नहीं है, लेकिन ज्ञान का प्रारंभिक बिंदु भगवान का भय है। और जब तक हम उस दृष्टिकोण से शुरुआत नहीं करते, जब तक हमारे पास वह स्वभाव नहीं होता, तब तक हम नीतिवचन नहीं सुनेंगे। हम उनकी शिक्षा को नहीं समझ पायेंगे।

और हम उस श्रेणी में नहीं होंगे। बल्कि हम तो इसका तिरस्कार करने वालों की श्रेणी में आ जायेंगे और मूर्ख कहलायेंगे। मूर्ख वे लोग नहीं होते जिनमें बुद्धि की कमी होती है।

और ये सिर्फ वे लोग नहीं हैं जो सोचने में सक्षम नहीं हैं। वास्तव में, वे सबसे बुद्धिमान हो सकते हैं, और वे अपनी सोच में सबसे स्पष्ट हो सकते हैं। लेकिन वे मूल्यों की उचित समझ या इस सोच का उपयोग करने के सही तरीके को नहीं समझते हैं।

और इसलिए, वे नैतिक रूप से विकृत हैं। अब डर क्या है? खैर, हम अक्सर कहते हैं कि डर क्या है, भगवान के प्रति श्रद्धा है। और यह सच है।

लेकिन डर सिर्फ श्रद्धा से थोड़ा अधिक है। और यहां, मैं आपको उन विभिन्न मुठभेड़ों पर वापस ले जाना चाहता हूं जो पवित्रशास्त्र में भगवान की दिव्य महिमा के साथ मुठभेड़ के बारे में हैं। हम माउंट सिनाई का उपयोग कर सकते हैं, और आपको याद होगा कि जब भगवान की महिमा

पहाड़ पर दिखाई दी, तो लोग पीछे हट गए, और उन्हें स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया कि वे सीमा पार न करें क्योंकि वे भगवान की महिमा और पवित्रता का उल्लंघन करेंगे।

लेकिन दूसरे शब्दों में, प्रभु का भय मानने का अर्थ है उस महिमा, उस दिव्यता के बारे में कुछ समझना, उसकी निर्णय लेने की शक्ति के बारे में कुछ समझना, जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक कहती है, हमारा ईश्वर एक भस्म करने वाली आग है। चलिए एक और उदाहरण लेते हैं। यशायाह भविष्यद्वक्ता कहता है, जिस वर्ष राजा यशायाह मरा, उस वर्ष मैं ने प्रभु को ऊंचे और ऊंचे स्थान पर देखा।

और फिर वह थोड़ी सी झलक देता है कि यदि आप परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में आए तो आप क्या देख सकते हैं। और उस ने उत्तर दिया, हाय मुझ पर, क्योंकि मैं अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच में रहता हूँ। दूसरे शब्दों में, वास्तविक भय तब होता है जब हमें अपनी कमजोरी का एहसास होता है, और जब हम वास्तव में इस जीवनदाता पर हमारी निर्भरता को समझते हैं, जिसने हमारे घर और उसमें रहने में सक्षम होने के साधनों को संभव बनाया है।

तो यह हमेशा ज्ञान के लिए शुरुआती बिंदु है, इस जीवनदाता को जानने के लिए, अपने जीवन और कल्याण के स्रोत को जानने के लिए, और हमारी निर्भरता के बारे में इस तरह का पूरा ज्ञान रखने के लिए, जिसका अर्थ है कि हम इसका सम्मान करते हैं, इसका सम्मान करते हैं, और इसके विपरीत कार्य करने से डरेंगे। नीतिवचनों में हमारा सामना अनेक व्यक्तित्वों से होता है। ऐसे लोग हैं जो ऐतिहासिक रूप से बुद्धिमान हैं, जो नीतिवचन जैसी पुस्तकों में दिए गए निर्देशों को संरक्षित करते हैं, अध्याय 1, छंद 6 में बुद्धिमानों के शब्दों को संरक्षित करते हैं। तो, यह ज्ञान की विरासत है जो प्रसारित और प्रसारित होती है।

लेकिन साहित्यिक बुद्धिमान भी हैं, और नीतिवचन उन्हीं को संबोधित हैं। अर्थात्, हमारे मामले में, हम इस पुस्तक के पाठक हैं। हम इसे पढ़ रहे हैं क्योंकि हमें यह जानने की जरूरत है कि भगवान हमें क्या बताना चाहते हैं।

और हमें यह जानने की आवश्यकता है कि हम न केवल ईश्वर, उसकी दुनिया से बल्कि उसके भीतर मौजूद अन्य लोगों से भी कैसे जुड़ सकते हैं। निस्संदेह, मूर्ख वे हैं जो ज्ञान के उस वृक्ष का हिस्सा लेते हैं जिसके बारे में हम उत्पत्ति की पुस्तक में पढ़ते हैं। ज्ञान का यह वृक्ष अच्छाई और बुराई का वृक्ष था।

यह ज्ञान का दावा था जो कहता था, एक ओर, हम वह सब कुछ जान सकते हैं जो जानना है, अच्छा या बुरा, समग्रता, सब कुछ। लेकिन निःसंदेह, इसका निहितार्थ यह है कि यदि मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो मुझे जानना आवश्यक है, तो मैं जानता हूँ कि क्या अच्छा है, और मैं यह निर्धारित और निर्णय लेता हूँ कि क्या अच्छा है। और यहीं पर नीतिवचन का अभियोग है।

एक रास्ता है जो इंसान को सही लगता है और उसका अंत मौत है। तो, जो लोग बुद्धिमानों के इस रहस्योद्घाटन को अस्वीकार करते हैं वे वही हैं जो इस मार्ग पर हैं जो गड्डे की ओर जाता है। एक तीसरा समूह है, और इनका अंग्रेजी शब्द कॉलो द्वारा सबसे अच्छा वर्णन किया गया है।

लेकिन यह ऐसी बात नहीं है जो किसी के लिए बहुत सामान्य है, और मुझे लगता है कि इसके लिए हम जो सबसे अच्छा पदार्थ दे सकते हैं वह वास्तव में भोलापन है। और ये वे व्यक्ति हैं जो प्रभु के भय के संबंध में एक प्रकार से संतुलन में हैं। वे प्रभु के भय के बारे में जानते हैं, उन्होंने प्रभु के भय को अस्वीकार नहीं किया है, लेकिन न ही उन्होंने इस बारे में कुछ सीखा है कि प्रभु के भय का पालन करने का क्या मतलब है।

और इसलिए, विशेष रूप से इन्हें नीतिवचन के निर्देश की आवश्यकता है, और पिता के शब्द इन युवाओं को संबोधित हैं ताकि वे ज्ञान प्राप्त कर सकें।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या दो है, नीतिवचन का उद्देश्य, नीतिवचन अध्याय 1।